• बाल कविता...

आज सवेरे...

आज सवेरे
काम किए मैंने कुछ अच्छे!
आज सवेरे गया पार्क में
देखा मैंने फूलों को,
फूलों को देखा तो भाई
समझ गया मैं भूलों को!
तय कर डाला मस्त रहूंगा
और हंसूंगा खिल-खिलकर,
मेहनत से हर काम करूंगा
दिखलाऊंगा कुछ बनकर!
आकर होम वर्क कर डाला
फिर पौधों में पानी डाला,
पापा बोले-
देखो-देखो
ऐसे होते अच्छे बच्चे!
बैठ धूप में चिड़ियों को
देखा मैंने कथा सुनाते,
पहली बार पेड़ को देखा
हौले-हौले से मुस्काते!
सजा हुआ था आसमान में
रंगों का प्यारा मेला,
आहा, अपना जीवन भी है
सचमुच, कैसा अलबेला!
मैंने कविता एक बनाई
सुनकर झट दीदी मुस्काई,
सुंदर और बनेगी दुनिया-
काम करें हम अच्छे-अच्छे!

-प्रकाश मनु

• चुटकुले...

कंजूस महिला दुकानदार से –
ऐसा साबुन दो जो कम घिसे और नहाने के बाद चेहरे पे लाली लाए...
दुकानदार नौकर से –
मैडम को एक ईंट का टुकड़ा दे दो...!!!

😀 😀 😀

पत्नी – आप जो मुझे नाम लेकर बुलाते हैं, इस कारण बच्चे भी अब मुझे नाम लेकर बुलाने लगे हैं...!
पति – अच्छा... तो कल से मैं तुम्हें मम्मी कहकर बुलाऊंगा...!!!

• आप जानते हैं...

पक्षियों का घोंसला...

पृथ्वी पर हजारों प्रकार के सुंदर रंग बिरंगे पक्षी पाए जाते हैं। अलग-अलग प्रकार के पक्षी अलग-अलग प्रकार के घोंसले बनाते हैं, लेकिन अक्सर यह प्रश्न पूछा जाता है कि पक्षी घोंसला क्यों बनाते हैं? अगर ध्यान से देखा जाए तो सभी पक्षी घोंसला नहीं बनाते, पक्षियों की कुछ प्रजातियां ऐसी हैं जो कि जमीन पर ही अंडे दे देती है, कुछ पहाड़ों की चट्टानों पर अंडे देते हैं, कोयल जैसे परजीवी पक्षी अपना स्वयं का घोंसला नहीं बनाते हैं बल्कि किसी और पक्षी के घोसले में अंडे देते हैं। पक्षियों का विकास डायनासौरों की एक प्रजाति से हुआ है, कई डायनासोर घोंसला बनाते थे और अपने अंडे उसमे सुरक्षित रखते थे, पक्षियों का यह व्यवहार काफी पुराना है।

ज्यादातर पक्षी प्रजनन काल में एक नया घोंसला बनाते हैं, कुछ पक्षी ऐसे भी हैं जो अपने घोंसले को ठीक करके उसे कई साल तक इस्तेमाल करते हैं, पक्षियों की ज्यादातर प्रजातियों में मादा पक्षी ही घोंसला बनाती है हालांकि इस काम में नर पक्षी भी मदद करता है, कुछ कम प्रजातियों में इसका उल्टा व्यवहार भी देखा जाता है जहां केवल नर पक्षी ही सुंदर घोंसला बनाकर मादाओं का आकर्षित करता है।

पक्षियों के घोंसले बनाने का कारण अंडों को सुरक्षा प्रदान करना है, घोंसले के अंदर अंडे परभक्षियों से और मौसम के प्रभाव से सुरक्षित रहते हैं, उन पर तापमान धूप और हवाओं का असर नहीं होता है इससे पक्षी अपने प्रजाति का जिंदा रहना सुनिश्चित करते हैं।

वह पक्षी जो घोंसला नहीं बनाते हैं उसके पीछे मुख्य कारण यह है कि उन्हें इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती। पेंग्विन पक्षी पर बर्फीले माहौल एंटार्कटिक में रहता है अगर पेग्विन पक्षी जमीन पर घोंसला बनाए तो उसका अंडा बर्फ में जैम सकता है इसीलिए नर पक्षी अंडे को अपने पैरों के बीच दबा कर रखता है, ताकि उस का तापमान सही बना रहे। उत्तरी अमेरिका में कुछ इस प्रकार के उल्लू पाए जाते हैं जो की जमीन खोद कर उसके अंदर अपने अंडे को रखते हैं, इस तरह से वह अपने अन्डो को परभक्षियों और रेगिस्तानी गर्म वातावरण से बचा लेते।

• बाल-कथा

मेंढकराज और नाग...

एक कुएं में बहुत से मेंढक रहते थे। उनके राजा का नाम था गंगदत्त। गंगदत्त बहुत झगड़ालू स्वभाव का था। आसपास दो-तीन और भी कुएं थे। उनमें भी मेंढक रहते थे। हर कुएं के मेंढकों का अपना राजा था।

हर राजा से किसी न किसी बात पर गंगदत्त का झगड़ा चलता ही रहता था। वह अपनी मूर्खता से कोई गलत काम करने लगता और बुद्धिमान मेंढक रोकने की कोशिश करता तो मौका मिलते ही अपने पाले गुंडे मेंढ़कों से पिटवा देता। कुएं के मेंढकों के भीतर गंगदत्त के प्रति रोष बढ़ता जा रहा था। घर में भी झगड़ों से चैन न था। अपनी हर मुसीबत के लिए दोष देता।

एक दिन गंगदत्त पड़ोसी मेंढक राजा से खूब झगड़ा। खूब तू-तू, मैं-मैं हुई। गंगदत्त ने अपने कुएं में आकर बताया कि पड़ोसी राजा ने उसका अपमान किया है। अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेंढकों को आदेश दिया कि पड़ोसी कुएं पर हमला करें सब जानते थे कि झगड़ा गंगदत्त ने ही शुरू किया होगा।

कुछ सयाने मेंढकों तथा बुद्धिमानों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा, राजन, पड़ोसी कुएं में हमसे दुगने मेंढक हैं। वे स्वस्थ व हमसे अधिक ताकतवर हैं। हम यह लड़ाई नहीं लड़ेंगे।

गंगदत्त सन्न रह गया और बुरी तरह तिलमिला गया। मन ही मन उसने ठान ली कि इन गद्दारों को भी सबक सिखाना होगा। गंगदत्त ने अपने बेटों को बुलाकर भड़काया, बेटा, पड़ोसी राजा ने तुम्हारे पिताश्री का घोर अपमान किया है। जाओ, पड़ोसी राजा के बेटों की ऐसी पिटाई करो कि वे पानी मांगने लग जाएं।

गंगदत्त के बेटे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। आखिर बड़े बेटे ने कहा, पिताश्री, आपने कभी हमें टर्राने की इजाजत नहीं दी। टर्राने से ही मेंढकों में बल आता है, हौसला आता है और जोश आता है। आप ही बताइए कि बिना हौसले और जोश के हम किसी की क्या पिटाई कर पाएंगे?

अब गंगदत्त सबसे चिढ़ गया। एक दिन वह कुढ़ता और बड़बड़ाता कुएं से बाहर निकल इधर-उधर घूमने लगा। उसे एक भयंकर नाग पास ही बने अपने बिल में घुसता नजर आया। उसकी आंखें चमकीं। जब अपने दुश्मन बन गए हों तो दुश्मन को अपना बनाना चाहिए। यह सोच वह बिल के पास जाकर बोला, नागदेव, मेरा प्रणाम।

नागदेव फुफकारा, अरे मेंढक मैं तुम्हारा बैरी हूं। तुम्हें खा जाता हूं और तू मेरे बिल के आगे आकर मुझे आवाज दे रहा है।

गंगदत्त टर्राया, हे नाग, कभी-कभी शत्रुओं से ज्यादा अपने दुख देने लगते हैं। मेरा अपनी जाति वालों और सगों ने इतना घोर अपमान किया है कि उन्हें सबक सिखाने के लिए मुझे तुम जैसे शत्रु के पास सहायता मांगने आना पड़ा है। तुम मेरी दोस्ती स्वीकार करो और मजे करो।

नाग ने बिल से अपना सिर बाहर निकाला और बोला, मजे, कैसे मजे?

गंगदत्त ने कहा, मैं तुम्हें इतने मेंढक खिलाऊंगा कि तुम मोटाते-मोटाते अजगर बन जाओगे।

नाग ने शंका व्यक्त की, पानी में मैं जा नहीं सकता। कैसे पकडूंगा मेंढक?

गंगदत्त ने ताली बजाई, नाग भाई, यहीं तो मेरी दोस्ती तुम्हारे काम आएगी। मैंने पड़ोसी राजाओं के कुओं पर नजर रखने के लिए अपने जासूस मेंढकों से गुप्त सुरंगें खुदवा रखीं हैं। हर कुएं तक उनका रास्ता जाता है। सुरंगें जहां मिलती हैं, वहां एक कक्ष है। तुम वहां रहना और जिस-जिस मेंढक को खाने के लिए कहूं, उन्हें खाते जाना।

-जारी

अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेंढकों को आदेश दिया कि पड़ोसी कुएं पर हमला करें सब जानते थे कि झगड़ा गंगदत्त ने ही शुरू किया होगा। कुछ सयाने मेंढकों तथा बुद्धिमानों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा, राजन, पड़ोसी कुएं में हमसे दुगने मेंढक हैं...

• जानकारी...

संवाद...

अध्ययन में पाया गया है कि गहरे समुद्र में रहने वाले प्राणी खाने और खुद की सुरक्षा के लिए पानी में ऊपर और नीचे जाते समय आवाज के जरिए संवाद करते हैं और यह आवाज इंसानी कान को सुनाई नहीं देती। संवेदनशील श्रव्य उपकरणों का इस्तेमाल करके शोधकर्ताओं ने पाया है कि इन प्राणियों के समुद्र में रोजाना ऊपर या नीचे जाते समय एक खास किस्म की कम आवत्ति वाली आवाज आती है। गहरे पानी के ये प्राणी पर्यावरणीय आवाजों को सुनकर और उन पर प्रतिक्रिया देकर संवाद कर सकते हैं। ये प्राणी गहरे पानी में मेसोपेलेजिक जोन में रहते हैं, जो सतह से नीचे 200 से 1000 मीटर की गहराई में है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के सिमोन बॉमान पिकरिंगके अनुसार मेसोपेलेजिक जोन बेहद अंधकारमय होता है और वहां इन प्राणियों के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं होता। इन प्राणियों का कुल वजन लगभग 10 अरब टन का है और ये बेहद सूक्ष्म प्लावकों और पक्षियों एवं समुद्री स्तनधारियों जैसे बड़े शिकारियों के बीच की कड़ी हैं।

• चावल...

धान के बीज को चावल कहते हैं। यह धान से ऊपर का छिलका हटाने से प्राप्त होता है। भारत में भात, खिचड़ी सहित काफी सारे पकवान बनते हैं। चावल का चलन दक्षिण भारत और पूर्वी-दक्षिणी भारत में उत्तर भारत से अधिक है। इसे कभी-कभार षड्स भी कहा जाता है, क्योंकि में स्वाद के छहों प्रमुख रस मौजूद हैं। सांस्कृतिक हिंदी में पके हुए चावल को भात कहा जाता है, किन्तु अधिकतर हिन्दी भाषी भात शब्द का प्रयोग कम ही करते हैं।